सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ. प्र.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के सेमेस्टरवार प्रश्नपत्र

विषय : हिन्दी साहित्य

वर्ष	सेमेस्टर	कोर्स कोड	प्रश्नपत्र का शीर्षक	लिखित / प्रयोगात्मक	क्रेडिट
बी0ए0 प्रथम वर्ष	प्रथम	A010101T	मध्यकालीन हिन्दी काव्य	लिखित	06
बी0ए0 प्रथम वर्ष	द्वितीय	A010201T	हिन्दी कविता का इतिहास	लिखित	06
बी0ए0 द्वितीय वर्ष	तृतीय	A010301T	हिन्दी गद्य	लिखित	06
बी0ए0 द्वितीय वर्ष	चतुर्थ	A010401T	प्रयोजनमूलक हिन्दी	लिखित	06
बी0ए0 तृतीय वर्ष	पंचम	A010501T	हिन्दी के मुसलमान कवि	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	पंचम	A010502T	हिन्दी कथा साहित्य	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	षष्ठ	A010601T	हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का इतिहास	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	षष्ठ	A010602T(O)	हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि / हिन्दी में रचनात्मक कौशल	लिखित	05
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	सप्तम्	A010701T	शोध प्रविधि	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	सप्तम्	A010702T	आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	सप्तम्	A010703T	हिन्दी नाट्य साहित्य	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	सप्तम्	A010704T	भारतीय काव्यशास्त्र	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	सप्तम्	A010705T(O)	लोक साहित्य / तुलनात्मक अध्ययन अथवा हिन्दी शोध परियोजना	लिखित / परियोजना कार्य	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	अष्टम्	A010801T	हिन्दी आलोचना और आलोचक	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	अष्टम्	A010802T	आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध काव्य	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	अष्टम्	A010803T	राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी काव्य	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	अष्टम्	A010804T	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	लिखित	04
बी0ए0 चतुर्थ वर्ष	अष्टम्	A010805T(O)	हिन्दी शोध परियोजना अथवा भाषा विज्ञान तथा देवनागरी लिपि / प्रवासी हिन्दी साहित्य	लिखित / परियोजना कार्य	04

विशेष :– बी0ए0 चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा सम्पन्न होने के बाद के ग्रीष्मावकाश मे विद्यार्थी को दो मुख्य (मेजर) विषयों मे से किसी एक विषय से संबधित शोध–परियोजना किसी विभागीय शिक्षक के निर्देशन मे करनी होगी। यह शोध–परियोजना उक्त अवधि मे न कर पाने की स्थिति मे बी0ए0 पंचम सेमेस्टर मे अनिवार्यतः पूर्ण करनी होगी।

निर्देश :

1. यह पाठ्यक्रम बी. ए. में हिन्दी का मुख्य (मेजर) विषय के रूप में चयन करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए है।
2. बी. ए. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के चारो सेमेस्टर के लिये निर्धारित प्रश्नपत्र सभी के लिए अनिवार्य (CORE PAPER) होंगे। बी. ए. तृतीय वर्ष में पंचम के दोनो तथा षष्ठ सेमेस्टर का पहला प्रश्नपत्र अनिवार्य होंगे तथा षष्ठ सेमेस्टर के दूसरे प्रश्नपत्र के लिए विकल्प की सुविधा दी गयी है। षष्ठ सेमेस्टर के द्वितीय पत्र के रूप में **हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि** अथवा **हिन्दी में रचनात्मक कौशल** में से किसी का भी चयन विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

सहायक चयनित (Minor Elective) पाठ्यक्रम

बी0ए0 प्रथम वर्ष	प्रथम सेमेस्टर	A010102T(ME)	(A) हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र अथवा (B) हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा भाषा विज्ञान	चयनित (Elective Paper)	लिखित	6
बी0ए0 द्वितीय वर्ष	तृतीय सेमेस्टर	A010302T(ME)	(A) हिन्दी गद्य अथवा (B) हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा भाषा विज्ञान	चयनित (Elective Paper)	लिखित	6

1. यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है, जो किसी अन्य संकाय/विषय के विद्यार्थी होंगे, परन्तु कला संकाय से हिन्दी को सहायक (माइनर) विषय के रूप मे चुनेंगे।
2. इस पाठ्यक्रम को बी. ए. के विद्यार्थियों को प्रथम दो वर्षों के प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर हेतु तैयार किया गया है। प्रत्येक सेमेस्टर (प्रथम एवं तृतीय) के लिए दो–दो वैकल्पिक प्रश्नपत्रों का निर्माण किया गया है, जिनमें से अपनी सुविधा एवं रुचि के अनुसार किसी एक–एक का चयन विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए करना होगा।
3. इस प्रकार हिन्दी विषय का माइनर इलेक्टिव के रूप मे चयन करने वाले विद्यार्थियों को उक्त चार मे से दो प्रश्नपत्र पढ़ने होंगे। प्रथम वर्ष के लिए निर्धारित प्रथम सेमेस्टर के प्रश्नपत्रों मे से विद्यार्था किसी एक माइनर प्रश्नपत्र का अध्ययन करेंगे। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष के तृतीय सेमेस्टर के प्रश्नपत्रों मे से किसी एक का अध्ययन विद्यार्थियों को करना होगा। इस प्रकार प्रथम एवं द्वितीय वर्ष मे मात्र दो माइनर प्रश्नपत्रों का अध्ययन ही विद्यार्थियों को इन चार प्रश्नपत्रों मे से करना होगा।
4. इस पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विद्यार्थियों को साहित्य का आस्वाद भी प्राप्त हो सके और और वे प्रतियोगी परीक्षाओं मे आने वाले सामान्य हिन्दी के प्रश्नों की तैयारी भी कर सकें।
5. हिन्दी का प्रत्येक माइनर प्रश्नपत्र छः क्रेडिट का होगा जिसके लिए साठ कक्षाएँ निर्धारित होंगी।

बी0ए0 हिन्दी मेजर

कार्यक्रम/कक्षा : **सर्टिफिकेट**	**बी. ए. प्रथम वर्ष**	सेमेस्टर : **I**
विषय : **हिन्दी**		
पाठ्यक्रम कोड: **A010101T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **मध्यकालीन हिन्दी काव्य**	
पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) : इस प्रश्नपत्र में हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन एवं रीतिकालीन कवियों को स्थान दिया गया है। जनमानस पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ने वाले इन कवियों के काव्य ने हमारे बहुत से जीवन–मूल्यों के विकास में अपना योगदान दिया है जो आज भी प्रासंगिक हैं। अतः ऐसे महत्त्वपूर्ण काव्य से विद्यार्थियों को परिचित कराने के उद्देश्य से इस प्रश्नपत्र की रचना की गयी है।		
क्रेडिट **: 6**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 33%**
कुल व्याख्यान संख्या- 90		

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**रविदास** (काव्य मंजूषा; संपादक–सुधा जितेन्द्र; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली) पद संख्या– 9, 16, 17, 20, 26, 35, 37, 38, 41, 44 तथा साखी– 1 से 8 तक। **आलोचना के बिन्दु**– सन्त–काव्य–परम्परा और रैदास; रैदास की काव्यगत विशेषताएं; रैदास की भक्ति, रैदास का समाज–दर्शन।	15
II	**सूरदास** (प्राचीन काव्य संग्रह; संपादक–डॉ. राजदेव सिंह) विनय के पद संख्या– 1 से 5; बाललीला के पद– 6, 7, 8; मुरली प्रसंग– 1 से 4। **आलोचना के बिन्दु**– कृष्ण–भक्ति काव्य–परम्परा में सूरदास का स्थान; सूर की भक्ति, सूरदास का विरह–वर्णन; सूर का वात्सल्य–वर्णन।	15
III	**तुलसीदास** : (प्राचीन काव्य संग्रह; संपादक–डॉ. राजदेव सिंह) विनय के पद; बाललीला; वन–गमन; लक्ष्मण–मूर्च्छा तथा सुभाषित। **आलोचना के बिन्दु**– राम–काव्य–परम्परा को तुलसीदास की देन; तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, काव्यगत विशेषताएँ।	15
IV	**बिहारीलाल** (बिहारी रत्नाकर; संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर) दोहा संख्या– 1, 6, 7, 15, 18, 19, 20, 21, 25, 32, 38, 42, 48, 51, 60, 69, 73, 121, 131, 141, 191, 300, 363, 371। **आलोचना के बिन्दु**– बिहारी : रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि, बिहारी की कविताओं में गागर में सागर।	15
V	**घनानन्द** (घनानन्द कवित्त; संपादक– विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) छंद संख्या– 1 से 20 तक। **आलोचना के बिन्दु**– घनानन्द : प्रेम की पीर के कवि। घनानन्द का सौन्दर्य–वर्णन; घनानन्द की भक्ति; घनानन्द की काव्यकला।	15
VI	**भूषण : शिवा–बावनी** छन्द सं. : 4, 5, 17, 18, 25, 26, 32, 36, फुटकर 39 (आपस की फूट ही तें), 58, 59 (औरंगजेब)	15

अध्ययन के लिये सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
2. हरबंसलाल शर्मा, सूरदास; पेपरबैक दूसरा संस्करण–2011; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

3. मुंशीलाल शर्मा, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
4. नन्ददुलारे वाजपेयी, सूर संदर्भ, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
5. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
6. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
7. किशोरीलाल, घनानन्द : काव्य और आलोचना, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. नन्द किशोर पाण्डेय, संत साहित्य की समझ; यश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली; संस्करण–2018।
9. प्रो. हरीशकुमार शर्मा; तुलसी साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ; साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली; संस्क. 2012।
10. रामदेव शुक्ल; रसमूर्ति घनानन्द; प्रथम संस्करण–2021; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
11. डॉ. बच्चन सिंह; बिहारी का नया मूल्यांकन; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. रवीन्द्रकुमार सिंह; बिहारी सतसई : सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
13. राजमल बोरा, भूषण, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रण सन 2017

कार्यक्रम / कक्षा : **सर्टिफिकेट**	**बी. ए. प्रथम वर्ष**	सेमेस्टर : **II**
विषय : **हिन्दी**		

पाठ्यक्रम कोड **: A010201T**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: हिन्दी कविता का इतिहास**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्रदान करने के लिये तैयार किया गया है। किसी विषय के सम्यक् बोध के लिये उसके इतिहास का अध्ययन बड़ा सहायक होता है। अतः इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न कालखण्डों की विभिन्न परिस्थितियों में लिखे गये हिन्दी साहित्य के विकास–क्रम से अवगत हो सकेंगे और युग–विशेष में रचित साहित्य तथा उसकी प्रवृत्तियों को भी समझ सकेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की दृष्टि से भी यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों को विशेष सहायक होगा।

क्रेडिट **: 6**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 33%**

कुल व्याख्यान संख्या- 90

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**साहित्य की भारतीय परंपरा और हिन्दी भाषा तथा साहित्य :** हिन्दी भाषा की पृष्ठभूमि–संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश; साहित्य–लेखन की भारतीय परंपरा और हिन्दी साहित्य; हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ; हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन और नामकरण।	15
II	**आदिकाल :** आदिकाल का नामकरण तथा सीमांकन; आदिकाल की परिस्थितियाँ; आदिकाल का साहित्य (जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, रासो साहित्य तथा लौकिक साहित्य) आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ।	15
III	**भक्तिकाल :** भक्तिकाल के उदय की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियाँ; भक्तिकालीन साहित्य का वर्गीकरण; निर्गुण–सगुण काव्यधाराओं (ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, कृष्णाश्रयी तथा रामाश्रयी) का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ। भक्ति–साहित्य और लोक–जागरण।	15
IV	**रीतिकाल :** रीतिकाल की पृष्ठभूमि एवं नामकरण; रीतिकालीन प्रमुख काव्यधाराओं–रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ; भूषण एवं वीररसात्मक कविता।	15
V	**आधुनिक काल–1 :** आधुनिकता से अभिप्राय; आधुनिक काल की पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ; हिन्दी नवजागरण एवं भारतेन्दु युग; भारतेन्दुयुगीन साहित्य की बहुआयामिता एवं विशेषताएँ; हिन्दी भाषा एवं साहित्य को आ. महावीर प्रसाद विवेदी का योगदान; द्विवेदीयुगीन साहित्य का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ।	15
VI	**आधुनिक काल–2 :** छायावाद, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, साठोत्तरी कविता, समकालीन कविता, 21वीं सदी की कविता आदि का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ।	15

सहायक ग्रन्थः

1. डॉ. नगेन्द्र, (संपा.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976।
2. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996।
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019।

4. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992।
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019।
6. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियॉ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011।
7. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1961, तृतीय संस्करण।
8. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई, 1940।

कार्यक्रम/कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : **III**
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010301T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी गद्य**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस प्रश्नपत्र का विषय–क्षेत्र हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का सम्यक ज्ञान देना तथा उन्हें हिन्दी की कुछ प्रतिनिधि गद्य रचनाओं का अध्ययन करवाना है। इससे हिन्दी गद्य के अध्ययन, लेखन तथा आलोचना के प्रति उनकी रुचि विकसित होगी। गद्य साहित्य के पठन–पाठन की समुचित रीति को समझकर उनमें आलोचकीय विवेक उत्पन्न होगा और रचनाओं में अन्तर्निहित जीवन–मूल्यों से जुड़कर वे हिन्दी साहित्य की महत्ता को समझ सकेंगे। लेखन के क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों को इस पत्र से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

क्रेडिट : **6**	पूर्णांक**:25+75 =100**	उत्तीर्णांक**: 33%**

कुल व्याख्यान संख्या- 90

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	हिन्दी नाटक : **अंधेर नगरी**–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **आलोचना के बिन्दु**: हिन्दी नाटक को भारतेन्दु हरिश्चन्द की देन; 'अंधेरनगरी' का प्रतिपाद्य; 'अंधेरनगरी' की नाटक के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा; 'अंधेरनगरी' में व्यंग्य; 'अंधेरनगरी' की तात्कालिक प्रासंगिकता।	15
II	हिन्दी नाटक : **कहत राय प्रवीन**–सुरेन्द्र दुबे **आलोचना के बिन्दु** : सुरेन्द्र दुबे की नाट्यकला; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'कहत राय प्रवीन' की समीक्षा; 'कहत राय प्रवीन' में इतिहास, कल्पना और आधुनिक संवेदना; 'कहत राय प्रवीन' में राय प्रवीन का चरित्र–चित्रण।	15
III	हिन्दी कहानी–1 : **आकाशदीप**– जयशंकर प्रसाद **लाल पान की बेगम**– फणीश्वरनाथ रेणु **चीफ की दावत**– भीष्म साहनी **पिता**– ज्ञानरंजन **आलोचना के बिन्दु** : कहानी के तत्त्वों के आधार पर कहानियों की समीक्षा। पठित कहानियों के कथानक का सार तथा विशेषताएँ। कहानीकारों की कहानी–कला की विशेषताएँ।	15
IV	निबंध–1: **मजदूरी और प्रेम**– सरदार पूर्णसिंह **करुणा**– रामचन्द्र शुक्ल **भारत की सांस्कृतिक एकता**– गुलाबराय पठित निबंधों की आलोचना के बिन्दु : 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य तथा समीक्षा; हिन्दी निबंध और आ. रामचन्द्र शुक्ल; 'करुणा' निबंध का प्रतिपाद्य व समीक्षा।	15
V	निबंध–2: **देवदारु**– हजारीप्रसाद द्विवेदी **जीने की कला**–महादेवी वर्मा **मेरे राम का मुकुट भीग रहा है**– विद्यानिवास मिश्र **पठित निबंधों की आलोचना** : ललित निबंधकार के रूप में आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्थान; 'देवदारु' की समीक्षा, विद्यानिवास मिश्र की निबंध–शैली की विशेषताएँ; 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' का सारांश और समीक्षा।	15

VI	विविध विधाएं : **इन्सपेक्टर मातादीन चाँद पर (व्यंग्य)**– हरिशंकर परसाई **थियोसोफिकल सोसाइटी या ब्रह्म–विद्या समाज (पुस्तक–अध्याय)**–रामधारी सिंह दिनकर (संस्कृति के चार अध्याय) **सुधियां उस चन्दन वन की (संस्मरण)**–विष्णुकान्त शास्त्री **आलोचना के बिन्दु** : रचनाओं का प्रतिपाद्य; रचनाओं कीविधागत आधार पर समीक्षा तथा रचनाकारों का विधा–विशेष में योगदान।	15

सहायक ग्रन्थ :

1. रामचंद्र तिवारी, हिंदी निबंध और निबंधकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007।
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992।
4. रामचंद्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
5. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, गद्य विन्यास और विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2018।
7. के. सत्यनारायण (संपा.) दृश्य सप्तक, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, प्रथम संस्करण, सन 1975।
9. सोमनाथ गुप्ता, हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, इंद्रा चंद्र नारंग, इलाहाबाद तीसरा संस्करण 1951।
9. डॉ. दशरथ ओझा, हिंदी नाटक : उद्भव एवं विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
10. गिरीश रस्तोगी, हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. सत्यवती त्रिपाठी, आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
12. डॉ. रामचरण महेंद्र, हिन्दी एकांकी और एकांकीकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
13. मधुरेश; हिन्दी कहानी का विकास; लोकभारती, दिल्ली।
14. गोपाल राय; हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–1 और भाग–2।
15. इन्द्रनाथ मदान; हिन्दी कहानीः पहचान और परख।
16. डॉ. नामवर सिंह; कहानी : नई कहानी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

कार्यक्रम / कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर **: IV**

विषय : हिन्दी

पाठ्यक्रम कोड **: A010401**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: प्रयोजनमूलक हिन्दी**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को बहुप्रयोजनीय हिन्दी का ज्ञान कराना है और उन्हें विभिन्न व्यवहारों के योग्य हिन्दी में दक्ष बनाना है। राजभाषा के रूप में देश–विदेश में हिन्दी की स्थिति और कार्यालयी कार्यों में उसके प्रयोग को समझने से लेकर अनेक प्रयोजनों हेतु उसमें लेखन–कौशल का विकास वे अपने भीतर कर सकेंगे। वर्तमान समय में कम्प्यूटर की महत्ता, उपयोगिता तथा कार्य–कौशल की मूलभूत जानकारी भी वे प्राप्त कर सकेंगे जो उन्हें रोजगार–क्षम बनाने में सहायक होगी।

क्रेडिट : 6	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 33%**

कुल व्याख्यान संख्या- 90

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** अनुच्छेद 343 से 351 तक तथा अनुच्छेद 120 और 210। राष्ट्रपति के आदेश– सन 1952, 1955 एवं 1960। राजभाषा अधिनियम–1963 यथा–संशोधित 1967। राजभाषा नियम 1976 यथा–संशोधित 1987। राजभाषा हिन्दी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।	15
II	**शुद्ध–अशुद्ध हिन्दी :** हिन्दी की वर्तनी, लिंग, वचन, कारक, उच्चारण तथा विराम चिन्हों से संबन्धित होने वाली अशुद्धियाँ और उनका समाधान।	15
III	**कार्यालयी पत्राचार :** सरकारी पत्र; अर्द्धसरकारी पत्र; कार्यालय आदेश; परिपत्र; स्मरण पत्र; चेतावनी पत्र; अधिसूचना; ज्ञापन; निविदा; संकल्प; प्रेस–विज्ञप्ति।	15
IV	**प्रारूपण, टिप्पण, सक्षंपेण, पल्लवन एवं प्रतिवेदन :** प्रारूपण का अर्थ और क्षेत्र, प्रारूपण–लेखन की पद्धति। टिप्पण का परिचय तथा उपयोगिता, टिप्पण–लेखन की पद्धति, टिप्पण और टिप्पणी में अन्तर। संक्षेपण का अर्थ एवं उपयोग, संक्षेपण की पद्धति। पल्लवन का सामान्य परिचय, पल्लवन के सिद्धान्त, पल्लवन और निबंध–लेखन में अंतर। प्रतिवेदन का अर्थ एवं उपयोग, प्रतिवेदन के प्रकार एवं लेखन–विधि।	15
V	**कार्यालयी हिन्दी में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली :** इस इकाई में कार्यालयों एवं अधिकारियों के नाम, पदनाम, संबोधन आदि तथा प्रशासनिक एवं विधिक शब्दावली से सम्बन्धित सौ शब्दों की सूची दी जायेगी। उसी में से 12 शब्द विद्यार्थियों से परीक्षा में पूछे जायेंगे।	15
VI	**हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय और उपयोगिता; कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने की सुविधाएँ एवं समस्याएँ; हिन्दी में पीपीटी स्लाइड एवं पोस्टर–निर्माण। इन्टरनेट और हिन्दी; हिन्दी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइटें; सरकारी तथा गैरसरकारी चैनल (ज्ञानदर्शन, ई–पाठशाला, स्वयं, मूक्स आदि)।	15

पारिभाषिक शब्दों की सूची

1. Abandonment -परित्याग
2. Ability -योग्यता
3. Abolition -उन्मूलन अंत

4. Abridge -संक्षेपकरना न्यून करना
5. Absence -अनुपस्थिति
6. Absolve -विमुक्त करना
7. Absorb -अवशोषण करना ,समाहित करना
8. Abstract -सार
9. Absurdity -अर्थहीनता, बेतुकापन
10. Academic -शैक्षणिक
11. Academy -अकादमी
12. Acceptance -स्वीकार
13. Account -लेखा, खाता
14. Accurate -यथार्थ, सटीक
15. Accuse -अभियोग लगाना
16. Adjustment -समायोजन
17. Adjuster -समायोजक
18. Administrative -प्रशासकीय
19. Admonition -भर्त्सना
20. Affidavit -शपथनामा
21. Affiliate -सम्बद्धकरना
22. Allotment -आवंटन
23. Ambassador -राजदूत
24. Bench -न्यायपीठ
25. Bribe -घूस ,रिश्वत
26. Broadcast -प्रसारण
27. Cabinet -मंत्रिमंडल
28. Capital -पूँजी
29. Catalogue -ग्रंथसूची
30. Caution -सावधान
31. Cell -प्रकोष्ठ/कक्ष
32. Censure Motion - निन्दाप्रस्ताव
33. Circle -इलाका/अंचल
34. Claim -दावा
35. Claimant -दावेदार
36. Clause -खंड
37. Collusion -दुरभिसंधि
38. Commemoration -स्मारक
39. Commencement -प्रारंभ
40. Comment -टीका ,टिप्पणी
41. Concession -रियायत
42. Confidential -गोपनीय

43. Confirmation	-पुष्टि करना
44. Contribution	-अंशदान
45. Corrigendum	-शुद्धिपत्र
46. Controversial	-विवादास्पद
47. Corroborate	-संपुष्टि करना
48. Credibility	-विश्वसनीयता
49. Defamation	-मानहानि
50. Defence	-रक्षा
51. Defendant	-प्रतिवादी
52. Deficiency	-कमी
53. Denial	-अस्वीकार
54. Department	-विभाग
55. Deposit	-निक्षेप/जमा
56. Deputy	-उप
57. Detective	-गुप्तचर/जासूस
58. Dignitary	-उच्चपदधारी/उच्चपदस्थ
59. Discrepancy	-विसंगति
60. Dismiss	-पदच्युत करना
61. Disobey	-अवज्ञा करना/आज्ञा न मानना
62. Disposal	-निपटान/निवतन
63. Disqualify	-अनर्हकरना/अनर्ह होना
64. Disregard	-अवहेलना
65. Ditto	-यथोपरि/जैसे ऊपर
66. Duration	-अवधि
67. Draft	-प्रारूप/मसौदा
68. Earmark	- चिह्न करना
69. Eligible	-पात्र, अर्ह
70. Embassy	-राजदूतावास
71. Emblem	-प्रतीक/चिह्न
72. Enrolment	-नामांकन
73. Ensure	-आश्वस्त करना
74. Entitle	-हकदार होना
75. Faculty	-संकाय
76. Institute	-संस्थान
77. Extensive	-व्यापक/विस्तृत
78. Financial	-वित्तीय
79. Forward	-अग्रेषित करना
80. Judgement	-निर्णय
81. Legislative	-विधानमंडल

82. Leisure -अवकाश
83. Lien -पुनर्ग्रहणाधिकार
84. Literacy -साक्षरता
85. Misconduct -अनाचार/कदाचार
86. Monopoly -एकाधिकार
87. Nominee -नामिती/नामित/मनोनीत व्यक्ति
88. Non-acceptance -अस्वीकृति
89. Oath -शपथ
90. Observance -पालन
91. Prohibited -निषिद्ध
92. Project -परियोजना
93. Promotion -प्रोन्नति
94. Prospectus -विवरण-पत्रिका
95. Provisional -अस्थायी
96. Provision -उपबंध/शर्त ,व्यवस्था
97. Recommended -संस्तुत
98. Relaxation -छूट/रियायत/ढील
99. Unavoidable -अनिवार्य/अपरिहार्य
100. Valid -विधिमान्य

सहायक ग्रन्थः

1. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
2. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
3. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
4. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
5. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रक्रिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
7. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
8. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
9. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. हरिमोहन, कम्प्यूटर और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. पूरनचंद टंडन, भाषा दक्षता (भाग 01 से 04), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2018
12. कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, 1999
13. 17. http:shabdavali.rbi.org.in/ (बैकिंग शब्दावली)
14. http:rajbhasha.gov.in/hi/hindi-vocabulary (विभिन्न पारिभाषिक शब्दकोश)
18. http://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english-hindi (अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश)

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए.
डिप्लोमा / डिग्री</td><td colspan="2">बी. ए. द्वितीय वर्ष पर्यन्त ग्रीष्मावकाश</td><td>सेमेस्टर : IV व V के मध्य के ग्रीष्मावकाश की अवधि</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 3</td><td>पाठ्यक्रम कोड :
A010402T</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक : परियोजना कार्य</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
साहित्य हमें हमारे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है। साहित्य का संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। भारत की संस्कृति सर्वसमावेशी है, सहिष्णु है, उदार है। यह विशेषता यहां के साहित्य में भी परिलक्षित होती है। हिन्दी कविता प्राचीन काल से ही इस औदार्य–भाव से जुड़ी रही है। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसे मुसलमान हिन्दी कवियों और उनके इस तरह के काव्य से परिचित कराना है जो भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित हैं। इस तरह की कविताओं के अध्ययन से उनमें उदात्त सांस्कृतिक चेतना और भी पुष्ट तथा प्रगाढ़ हो सकेगी; उनमें राष्ट्र की महान संस्कृति के प्रति अनुराग जाग्रत होगा और धार्मिक सौहार्द विकसित होगा।</td></tr>
</table>

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. डिग्री</td><td>बी. ए. तृतीय वर्ष</td><td>सेमेस्टर : V</td></tr>
<tr><td colspan="3">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम कोड : A010501T</td><td>पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी के मुसलमान कवि</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
साहित्य हमें हमारे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है। साहित्य का संस्कृति से गहरा सम्बन्ध है। भारत की संस्कृति सर्वसमावेशी है, सहिष्णु है, उदार है। यह विशेषता यहां के साहित्य में भी परिलक्षित होती है। हिन्दी कविता प्राचीन काल से ही इस औदार्य–भाव से जुड़ी रही है। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसे मुसलमान हिन्दी कवियों और उनके इस तरह के काव्य से परिचित कराना है जो भारत की सनातन सांस्कृतिक चेतना से अनुप्राणित हैं। इस तरह की कविताओं के अध्ययन से उनमें उदात्त सांस्कृतिक चेतना और भी पुष्ट तथा प्रगाढ़ हो सकेगी; उनमें राष्ट्र की महान संस्कृति के प्रति अनुराग जाग्रत होगा और धार्मिक सौहार्द विकसित होगा।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक:25+75 =100</td><td>उत्तीर्णांक: 33%</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या- 75</td></tr>
</table>

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**रहीम :** **पाठ्यपुस्तक : रहीम ग्रन्थावली–विद्यानिवास मिश्र** 'दोहावली' से दोहा संख्या– 1, 2, 51, 68, 79, 106, 116, 155, 158, 190, 193, 229, 241, 271, 272। बरवै (भक्तिपरक)– 1, 2, 3, 4, 33, 43, 51, 52, 54, 78, 91,92। फुटकर पद– 2, 7, 12, 13।	15
II	**रसखान :** **पाठ्यपुस्तक–हिन्दी के मुसलमान कवि** सवैया संख्या 1 से 20 तक।	15
III	**शेख रंगरेजिन :** पाठ्यपुस्तक–हिन्दी के मुसलमान कवि दीनता– 1 से 5; कवित्त– 1 से 15 तक।	15
IV	**ताजः** **पाठ्यपुस्तक–हिन्दी के मुसलमान कवि** कवित्त संख्या– 1से 10; सवैया (प्रीति विषयक) 1 से 10 तक।	15
V	**नज़ीर :** **पाठ्यपुस्तक–हिन्दी के मुसलमान कवि** कृष्ण का बाल चरित	15
(**आलोचना–बिंदु** : कवियों का काव्य–सौष्ठव, कविताओं का अनुभूति पक्ष तथा काव्य–सौंदर्य।)		

सहायक ग्रंथ :

1. गंगा प्रसाद सिंह विशारद; हिन्दी के मुसलमान कवि; अनन्य प्रकाशन; ई 17, दिलशाद गार्डन; नवीन शाहदरा, दिल्ली–110032; प्रथम संस्करण : 2024।
2. विद्यानिवास मिश्र, गोविन्द रजनीश (सम्पादक); रहीम ग्रन्थावली; वाणी प्रकाशन, दिल्ली; पेपरबैक चतुर्थ संस्करण : 2022।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
4. हिन्दी साहित्य का भूमिका; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।

7. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास; सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="2">कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. डिग्री</td><td colspan="2">बी. ए. तृतीय वर्ष</td><td colspan="2">सेमेस्टर : **V**</td></tr>
<tr><td colspan="6">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम कोड : **A010502T**</td><td colspan="3">पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी कथा साहित्य**</td></tr>
<tr><td colspan="6">**पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :**
गद्य साहित्य में नाटक, उपन्यास एवं कहानी अत्यन्त लोकप्रिय विधाएं हैं। प्रस्तुत पत्र विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में हिन्दी की बहुख्यात् नाट्य एवं कथा–रचनाओं को रखा गया है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : **5**</td><td colspan="2">पूर्णांक : **25+75 =100**</td><td colspan="2">उत्तीर्णांक : **36**</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या- 75;</td><td colspan="3">प्रतिसप्ताह ट्यूटोरियल घण्टे : 5</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="4">विषयवस्तु</td><td>व्याख्यानों की संख्या</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="4">हिन्दी कथा साहित्य :
विशेषताएँ, उद्देश्य, प्रभाव एवं इतिहास– पूर्व प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="4">उपन्यास :
गोदान–प्रेमचन्द
प्रमुख बिन्दु– प्रेमचन्द की उपन्यास कला; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर गोदान की समीक्षा; प्रमुख पात्र; यथार्थ और आदर्श;स्त्री–विमर्श; गांव और शहर; किसान जीवन; वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="4">**बाणभट्ट की आत्मकथा**–हजारीप्रसाद द्विवेदी
आलोचना के प्रमुख बिन्दु– हिन्दी उपन्यास को आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का अवदान; 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का प्रतिपाद्य; इतिहास औरसंस्कृति–चेतना; आधुनिकता; स्त्री–दृष्टि; भाषा–शिल्प वैशिष्ट्य।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="4">कहानियां :
उसने कहा था–चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
कोसी का घटवार–शेखर जोशी
परिन्दे–निर्मल वर्मा
आलोचना के प्रमुख बिन्दु– कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला</td><td>15</td></tr>
<tr><td>V</td><td colspan="4">कहानियां :
गैंग्रीन–अज्ञेय
तीसरी कसम– फणीश्वरनाथ रेणु
इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर–हरिशंकर परसाई
आलोचना के प्रमुख बिन्दु– कहानियों की समीक्षा तथा कहानीकारों की कहानी–कला</td><td>15</td></tr>
</table>

सहायक ग्रंथ :

1. गोपाल राय; हिन्दी उपन्यास का इतिहास; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. मधुरेश; हिन्दी कहानी का विकास; लोकभारती, दिल्ली।
3. गोपाल राय; हिन्दी कहानी का इतिहास, भाग–1 और भाग–2।
4. इन्द्रनाथ मदान; हिन्दी कहानीः पहचान और परख।
5. डॉ. नामवर सिंह; कहानी : नई कहानी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. देवीशंकर अवस्थी (संपादक); नई कहानीः संदर्भ और प्रकृति; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. रामस्वरूप चतुर्वेदी; समकालीन हिन्दी साहित्यः विविध परिदृश्य;राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

कार्यक्रम / कक्षा : **बी. ए. डिग्री**	**बी. ए. तृतीय वर्ष**	सेमेस्टर **: VI**
विषय : **हिन्दी**		

पाठ्यक्रम कोड**: A010601T**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का इतिहास**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिक काल को आ. रामचन्द्र शुक्ल ने गद्यकाल की संज्ञा से विभूषित किया है तो इसका कारण आधुनिक युग में हुआ गद्य साहित्य का अपूर्व विकास है। हिन्दी गद्य के विकास में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण रही है। अतः हिन्दी साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित इस पत्र में विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता के इतिहास से परिचित कराया जायेगा। इस पत्र के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–

1. विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के आधुनिककाल में विकसित हुई गद्य की समृद्ध परम्परा को जान सकेंगे।
2. हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि, आधुनिक काल में विभिन्न चरणों में उसके उदय एवं विकास के लिये प्रेरक परिस्थितियों, उसकी विशेषताओं तथा प्रभावों को समझ सकेंगे।
3. हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास तथा उसकी विभिन्न सन्दर्भों में राष्ट्रीय भूमिका से भी विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
4. हिन्दी भाषा तथा उसमें रचित साहित्य की विरासत पर गर्व कर सकेंगे।

क्रेडिट **: 5**	पूर्णांक**:25+75 =100**	उत्तीर्णांक**: 33%**

कुल व्याख्यान संख्या- 75

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	हिन्दी गद्य का प्राचीन स्वरूप और परम्परा; आधुनिककालीन परिस्थितियों का हिन्दी गद्य के विकास में योगदान; आधुनिककालीन हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक उन्नयन में विभिन्न व्यक्तियों एवं संस्थाओं की भूमिका; भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य और गद्यकार; भारतेन्दुयुगीन हिन्दी गद्य एवं गद्यकार; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का हिन्दी गद्य को अवदान; हिन्दी गद्य के विकास में आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी की भूमिका।	15
II	हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं– नाटक; एकांकी; उपन्यास; कहानी तथा निबन्ध का उद्भव और विकास।	15
III	हिन्दी गद्य की विविध विधाओं– संस्मरण; जीवनी; आत्मकथा; रिपोर्ताज; रेखाचित्र, डायरी तथायात्रा–साहित्य का उद्भव और विकास।	15
IV	भारत में प्रेस का उदय और हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ; हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास; भारतेन्दुकालीन हिन्दी पत्र–पत्रिकाएं और उनके सम्पादक; द्विवेदीयुगीन हिन्दी पत्रकारिता और सरस्वती पत्रिका; स्वातन्त्र्य–पूर्व हिन्दी पत्रकारिता; भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका।	15
V	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान; समकालीन हिन्दी पत्रकारिता के विविध आयाम; समकालीन विमर्श और हिन्दी पत्रकारिता; हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप तथा परिदृश्य।	15

सहायक ग्रन्थ :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
2. हिन्दी साहित्य का भूमिका; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी साहित्य का आदिकाल; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।
4. हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास; हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल, दिल्ली।

5 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास; डॉ. बच्चन सिंह, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत : भाग 1, 2; विनय प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, ब्रहमनाल, वाराणसी।
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास; सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
8 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास; डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद।
9 हिन्दीसाहित्यः बीसवीं शताब्दी; आ. नन्ददुलारे वाजपेयी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
10 हिन्दी साहित्य का इतिहास दर्शन; नलिन विलोचन शर्मा; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
11 हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास; डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद। प्रथम एवं द्वितीय खण्ड।

कार्यक्रम / कक्षा : **बी. ए. डिग्री**	**बी. ए. तृतीय वर्ष**	सेमेस्टर**: VI**
विषय : **हिन्दी**		
पाठ्यक्रम कोड: A010602T(O-1)	पाठ्यक्रम शीर्षक **: हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि**	
पाठ्यक्रमपरिणाम (Course outcomes) : हिन्दी भाषा के अनेक आयाम हैं। इस पत्र में विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ ही हिन्दी क्षेत्र, हिन्दी भाषा का स्वरूप, उसके प्रयोग के विविध रूप आदि का अध्ययन कराया जायेगा; साथ ही देवनागरी लिपि से भी सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारियां देना इस पत्र का उद्देश्य है।		
क्रेडिट **: 5**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 33%**
कुल व्याख्यान संख्या- 75		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
I	**हिन्दी का उद्गम :** हिन्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएं, मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएं– शौरसेनी, अर्द्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएं; अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हिन्दी का सम्बन्ध; आधुनिक आर्यभाषाएं और उनका वर्गीकरण	15
II	**हिन्दी–क्षेत्र :** हिन्दी का भौगोलिक विस्तार; हिन्दी की उपभाषाएं– पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी वर्ग और उनकी बोलियां; खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएं; हिन्दी के विविध रूप–हिन्दी, उर्दू, दक्खिनी, हिन्दुस्तानी।	15
III	**हिन्दी का भाषिक स्वरूप :** हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था; खण्ड्य और खण्ड्येतर, हिन्दी ध्वनियों के वर्गीकरण का आधार, हिन्दी शब्द–रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास। हिन्दी की रूप–रचना : लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के सन्दर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया–रूप; हिन्दी वाक्य–रचना।	15
IV	**हिन्दी भाषा–प्रयोग के विविध रूप :** बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और सम्पर्क–भाषा; संचार–माध्यम और हिन्दी; कम्प्यूटर और हिन्दी; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति।	15
V	**देवनागरी लिपि :** का उद्भव और विकास; देवनागरी लिपि की विशेषताएं; देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता; देवनागरी लिपि में सुधार के प्रयत्न; देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15

विशेष :–

1. पाठ्यक्रम कोड में कोष्ठक में दिये गये (O-1) का अभिप्राय विकल्प (Option-1) से है। इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी स्वेच्छया **भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि** के स्थान पर **हिन्दी में रचनात्मक कौशल** का चयन कर सकते हैं।

सहायक ग्रंथ :

1. भाषा विज्ञान की भूमिका; डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा, अनुपम प्रकाशन, पटना।
2. भाषा विज्ञान; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र; डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. हिन्दी भाषा; डॉ. भोलानाथ तिवारी; किताब महल, इलाहाबाद।
5. हिन्दी भाषाः उद्भव एवं विकास; डॉ. हरदेव बाहरी।
6. हिन्दी भाषा का इतिहास; धीरेन्द्र वर्मा; हिन्दुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद।

7. आधुनिक भाषा विज्ञान; डॉ. राजमणि शर्मा; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी भाषा : स्वरूप और विकास; कैलाश चन्द्र भाटिया।
17. भाषा और समाज; रामविलास शर्मा; राजममल प्रकाशन, दिल्ली।
18. देश की हिन्दी; हरीशकुमार शर्मा; जिज्ञासा प्रकाशन, गाजियाबाद; संस्करण–2024।
10. हिन्दी भाषा; हरदेव बाहरी; अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम; रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव; पहला संस्करण, तीसरी आवृत्ति–2013; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

कार्यक्रम/कक्षा : बी. ए. डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर **: VI**
विषय : **हिन्दी**		
पाठ्यक्रम कोड **: A010602T (O-2)**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: हिन्दी में रचनात्मक कौशल**	
पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) : सामाजिक, व्यवसायिक, कार्यालयी तथा शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के भाषा–कौशल में निखार लाना। विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं एवं साक्षात्कार हेतु आत्मविश्वास उत्पन्न करना। विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल विकसित करना। भाषा–ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करना।		
क्रेडिट **: 5**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक**: 33%**
कुल व्याख्यान संख्या- 75		

इकाई	**विषयवस्तु**	**व्याख्यानों की संख्या**
I	**भाषा–सामर्थ्य :** सामान्य एवं तकनीकी शब्द, सुनना और बोलना– प्रभावी श्रवण के आयाम, शुद्ध उच्चारण, वार्तालाप–कुशलता; स्वाध्याय और उद्देश्य–केन्द्रित पाठन, सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन। हिन्दी में रोजगार की संभावनाएँ।	15
II	**मंचीय कौशल :** भाषण, स्वागत–भाषण, विषय–प्रवर्तन, अध्यक्षीय वक्तव्य, मंच–संचालन तथा धन्यवाद–ज्ञापन।	15
III	**आलेख–रचना :** सभा–संगोष्ठियों हेतु शोध–पत्र तैयार करना; पत्र–पत्रिकाओं के लिये आलेख रचना (लेख, शोधालेख, समीक्षा, पत्र–लेखन, स्तम्भ–लेखन आदि); डाइरी–लेखन की महत्ता एवं विधि; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हेतु वार्ता, साक्षात्कार एवं परिचर्चा तैयार करने की विधियाँ।	15
IV	**व्यवहारिक लेखन :** सूचना; संदेश; कार्यवृत्त; कार्यसूची; प्रतिवेदन; आत्मविवरण; आवेदन–पत्र तथा ई–मेल लेखन।	15
V	**साक्षात्कार–कौशल :** साक्षात्कार का अर्थ, महत्व एवं विशेषताएँ; साक्षात्कार के प्रकार; साक्षात्कारकर्ता की योग्यता एवं गुण, साक्षात्कार हेतु की जाने वाली तैयारी तथा साधन; मीडिया में साक्षात्कार की विशेषताएँ। नौकरी हेतु साक्षात्कार की तैयारी।	15

आवश्यक निर्देश :

पाठ्यक्रम कोड में कोष्ठक में दिये गये (O-2) का अभिप्राय विकल्प (Option-2) से है। इसका तात्पर्य यह है कि विद्यार्थियों को (O-1) या (O-2) में से किसी एक प्रश्नपत्र का ही अध्ययन करना है अर्थात् इस प्रश्नपत्र के लिये विद्यार्थी स्वेच्छया **भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि** अथवा **हिन्दी में रचनात्मक कौशल** का चयन कर सकते हैं।

सहायक ग्रन्थः

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा; राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान;लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शैलेन्द्र सेंगर; मीडिया लेखन और सम्पादन; आविष्कार प्रकाशन, दिल्ली।

3. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ; संचार माध्यम : तकनीक और लेखन; श्याम प्रकाशन, जयपुर।
4. गोपीनाथ श्रीवास्तव; सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. असगर वजाहत/प्रेमरंजन; टेलीविजन लेखन; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो वार्ता शिल्प;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो नाटक की कला;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. रमेश गौतम; रचनात्मक लेखन;भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा :बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स</td><td colspan="2">बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td><td>सेमेस्टर :VII</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम कोड : A010701T</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक : शोध प्रविधि</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
उच्चतर शिक्षा में शोध का बड़ा महत्त्व है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप बने पाठ्यक्रम में इसे और भी प्रोत्साहन दिया गया है। इसलिये इस प्रश्नपत्र की संरचना इस प्रकार की गयी है कि विद्यार्थी शोध से सम्बन्धित मूलभूत बातों को जान सकें और उनमें शोध के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके। इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में न केवल शोध की समझ विकसित हो सकेगी, अपितु वे गुणवत्तापूर्ण शोध करने की ओर उन्मुख भी हो सकेंगे।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक :
25+75 =100</td><td>उत्तीर्णांक : 36%</td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या- 60</td></tr>
</table>

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	शोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप; शोध के तत्त्व; शोध और आलोचना; शोध–चोरी (Plagiarism) एवं प्रतिलिप्याधिकार (Copyright)	15
II	शोध के प्रकार : साहित्येतिहासिक शोध; काव्यशास्त्रीय शोध; भाषावैज्ञानिक शोध; शैलीवैज्ञानिक शोध; लोकतात्कि शोध; अन्तर्विद्यावर्ती शोध; तुलनात्मक शोध; पाठानुसन्धान	15
III	शोध की पद्धतियाँ; शोधार्थी के गुण; शोध के सोपान; शोध विषय; रूपरेखा निर्माण; सामग्री–संकलन;	15
IV	शोध–प्रबन्ध–लेखन शोध–प्रबन्ध के तत्त्व; उद्धरण–लेखन; सन्दर्भोल्लेख एवं पाद–टिप्पणी; उपसंहार एवं परिशिष्ट; सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची	15

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा; शोध–प्रविधि; हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला; तृतीय संस्करण 2016।
2. एस.एन. गणेशन; अनुसन्धान प्रविधिः सिद्धान्त और प्रक्रिया; लोकभारती प्रकाशान, इलाहाबाद; संस्करण 2009।
3. विनयमोहन शर्मा; शोध प्रविधि; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2018।
4. महेन्द्र राजा जैन; शोध : क्या, क्यों और कैसे; अनन्य प्रकाशन, दिल्ली; संस्क. 2023।

कार्यक्रम / कक्षा :बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर **:VII**
विषय : **हिन्दी**		

पाठ्यक्रम कोड**: A010702T**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक–काव्य**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर भक्तिकाल तक के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों के काव्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। आदिकालीन और भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों रूपों में रचा गया है तथा भारतीय जनमानस को इसने काफी गहराई तक प्रभावित किया है। इस पत्र में आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य को रखा गया है। इस पत्र के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ प्रबन्ध–काव्यों को इस पत्र के अन्तर्गत चयनित किया गया है। इनके अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को प्रबन्ध–काव्यों के स्वरूप एवं महत्ता का परिज्ञान हो सकेगा।
2. मध्यकालीन जीवन की दिशा बदल देने के साथ ही समाज पर आज तक अपना प्रभाव बनाये हुए इन प्रबन्ध–काव्यों की विशेषताओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन जीवन–मूल्यों तथा काव्य–मूल्यों का भी विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।

क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक**: 36%**
कुल व्याख्यान संख्या- 60		

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**क. सरहपाद–दोहाकोश** ख.**गोरखनाथ–सबदी** पाठ्यपुस्तक : **आदिकालीन काव्य;** सम्पादक–डॉ. वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। **आलोचना के प्रमुख बिन्दुः** भक्ति–काव्य पर सिद्ध–नाथ साहित्य का प्रभाव; सिद्ध साहित्य और सरहपाद; सरहपाद का काव्य–सौष्ठव; नाथ–पन्थ और गोरखनाथ; गोरखनाथ के काव्य की प्रासंगिकता; गोरखनाथ का काव्य–सौन्दर्य।	15
II	**कबीरदास** : पाठ्य पुस्तक–**कबीर;** आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। **पाठांश**–पद सं.– 1, 2, 33, 41, 123, 130, 134, 160, 163, 168, 191, 199, 224, 247 तथा 256। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : कबीर की भक्ति–भावना; कबीर का रहस्यवाद; कबीर का समाज–दर्शन और उसकी प्रासंगिकता; कबीर की विद्रोह–भावना या क्रान्तिकारी चेतना; कबीर–काव्य का दार्शनिक पक्ष; कबीर : कवि के रूप में।	15
III	**सूरदास** : पाठ्य पुस्तकः **भ्रमरगीत सार**; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। पदसंख्या–9, 23, 25, 34, 62, 64, 65, 82, 85, 89, 95, 97, 115, 122, 130, 171, 384, 400। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– भ्रमरगीत काव्य–परम्परा और सूरदास; भ्रमरगीत : अन्तर्वस्तु तथा विदग्धता; सूर की भक्ति–भावना; श्रृंगार–वर्णन; लोक तत्त्व; काव्य–वैशिष्ट्य।	15
IV	**मीराबाई** : **मीरा का काव्य–विश्वनाथ त्रिपाठी** निपट बंकट छब अटके; म्हारां री गिरधर गोपाल दूसरा णां कूयां; माई सांवरे रंग राची; मैं गिरधर के घर जाऊं; सीसोद्यो रूठ्यो म्हांरो कोई करलेसी; हेली म्हासूं हरि बिन रह्यो न जाय; सांबरे मार्‌या तीर; मुरलिया बाजा जमणा तीर; भज मण चरण कंवल	15

	अवणासी। मीराबाई की भक्ति; कृष्ण–भक्ति काव्य–परम्परा में मीराबाई का स्थान; मीरा की विद्रोही चेतना; मीराबाई की काव्यगत विशेषताएं।	

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
3. पुरुषोत्तम अग्रवाल; अकथ कहानी प्रेम की; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. सूरदास; हरवंशलाल शर्मा

कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर **:VII**

विषय : **हिन्दी**

पाठ्यक्रम कोड **: A010703T**	पाठ्यक्रम शीर्षक **: हिन्दी नाट्य साहित्य**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

गद्य साहित्य में नाटक एवं एकांकी बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथा लोकप्रिय विधाएं हैं। प्रस्तुत पत्र विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक एवं एकांकी साहित्य के वैशिष्ट्य से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में हिन्दी की बहुख्यात् नाट्य एवं एकांकी–रचनाओं को रखा गया है। इस पत्र के महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–

1. विद्यार्थी चयनित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य को जान सकेंगे और उसके व्यापक अध्ययन के लिये प्रेरित होंगे।
2. नाट्य एवं कथा साहित्य के अध्ययन के आलोचकीय विवेक से सम्पन्न हो सकेंगे।
3. साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल का विकास हो सकेगा।

क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 36%**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	नाटक का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार; नाटक के तत्त्व; संस्कृत नाट्य–परम्परा और हिन्दी नाटक की पृष्ठभूमि; हिन्दी नाटक की विकास–यात्रा; एकांकी का स्वरूप; हिन्दी एकांकी का उद्भव और विकास।	15
II	नाटक–1: **स्कन्दगुप्त**–जयशंकर प्रसाद **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : जयशंकर प्रसाद का नाट्य–शिल्प; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'स्कन्दगुप्त' की समीक्षा; 'स्कन्दगुप्त' में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना; 'स्कन्दगुप्त' में युगबोध; स्कन्दगुप्त के प्रमुख पात्र।	15
III	नाटक–2 : **आषाढ़ का एक दिन**–मोहन राकेश **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : मोहन राकेश की नाट्य–कला; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' की समीक्षा; 'आषाढ़ का एक दिन' के नायक–नायिका एवं प्रतिनायक का चरित्र–चित्रण	15
IV	एकांकी : **औरंगजेब की आखिरी रात**–डॉ. रामकुमार वर्मा **भोर का तारा**–जगदीशचन्द्र माथुर **स्ट्राइक**–भुवनेश्वर **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : एकांकियों की समीक्षा तथा एकांकीकारों की एकांकी कला।	15

सहायक ग्रंथ :

1. बच्चन सिंह; हिन्दी नाटक; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार जयशंकर प्रसाद; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार भारतेन्दु की रंग–परिकल्पना; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. सिद्धनाथ कुमार; हिन्दी एकांकी; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी; समकालीन हिन्दी साहित्यः विविध परिदृश्य;राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

कार्यक्रम / कक्षा : **बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स**	**बी. ए. चतुर्थ वर्ष**	सेमेस्टर **: VII**
विषय : **हिन्दी**		

पाठ्यक्रम कोड : A010704T	पाठ्यक्रम शीर्षक **: भारतीय काव्यशास्त्र**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

साहित्य को सम्यक् रूप से समझकर उसका रसास्वादन करने अथवा उसकी समीक्षा करने में सक्षम होने के लिये साहित्यशास्त्र का ज्ञान अत्यावश्यक है। इस पाठयक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी न केवल भारतीय और पाश्चात्य साहित्यशास्त्र की प्रमुख सैद्धान्तिकी को समझ सकेंगे अपितु हिन्दी के कतिपय प्रमुख आलोचकों तथा उनकी आलोचना–पद्धतियों को जानकर आलोचकीय विवेक भी अपने भीतर पैदा कर सकेगे। हिन्दी आलोचना के विकास तथा उसकी प्रमुख पद्धतियों से भी वे अवगत हो सकेंगे।

क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 36%**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**काव्य का स्वरूप :** काव्य–लक्षण; काव्य–प्रयोजन; काव्य–हेतु; काव्यगुण; काव्यदोष। शब्दशक्तियाँ– अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना।	15
II	**काव्य के सिद्धांत :** रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, तथा औचित्य सिद्धांतों का परिचय।	15
III	**अलंकार परिचय :** अलंकार सिद्धान्त तथा निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय– अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, विशेषोक्ति, विभावना, द्रष्टान्त, उदाहरण, प्रतीप, काव्यलिंग, अपह्नुति, असंगति तथा विरोधाभास।	15
IV	**छन्द परिचय–** छन्द की परिभाषा और तत्त्व; छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्त्व। अग्रांकित छन्दों के लक्षण और उदाहरण– वंशस्थ, वसन्ततिलका; मन्दाक्रान्ता; शार्दूलविक्रीडित; कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, बरवै, हरिगीतिका, कुण्डलिया, छप्पय तथा मुक्त छन्द।	15

सहायक ग्रन्थः

1. बच्चन सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1987
2. भगीरथ मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988
3. भगीरथ मिश्र काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
5. डॉ. रामचन्द तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2010
6. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1990

कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर **: VII**
विषय : **हिन्दी**		
पाठ्यक्रम कोड **: A010705T (O-1)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **लोक साहित्य**	
पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) : लोक साहित्य लोक की जीवन–शैली में रचा–बसा है और लोकमानस को शताब्दियों–सहस्राब्दियों से प्रभावित करता रहा है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा विद्यार्थी लोक साहित्य के स्वरूप को समझ सकेंगे और उसके वैशिष्ट्य तथा उपयोगिता को जानकर उसके अध्ययन तथा उसके प्रति शोध के लिये प्रेरित हो सकेंगे।		
क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 36%**
कुल व्याख्यान संख्या- **60**		

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**लोक साहित्य का सामान्य परिचय :** लोक की अवधारणा; लोक साहित्य : परिभाषा और स्वरूप; लोक साहित्य का वर्गीकरण; लोक साहित्य की विशेषताएँ एवं महत्त्व। लोक जीवन में लोक साहित्य की स्थिति और भूमिका; लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास। लोक साहित्य में नित्य नूतनता और प्रसार।	15
II	**साहित्य, लोक साहित्य और लोक संस्कृति :** लोक साहित्य और साहित्य में अन्तर; लोक साहित्य और साहित्य में पारस्परिक सम्बन्ध (साहित्य में लोक साहित्य के तथा लोक साहित्य में साहित्य के तत्त्वों की व्याप्ति एवं प्रभाव); लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति में अंतःसंबंध; लोक साहित्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना।	15
III	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– एक :** लोकगीत : परिभाषा एवं प्रकार; लोकगीतों की विशेषताएँ; लोककथा का अर्थ एवं विशेषताएँ; लोकजीवन में लोककथाओं की भूमिका एवं महत्ता; लोकगाथा : अभिप्राय एवं स्वरूप; लोकगाथा का लोकगीत और लोककथा से अन्तर।	15
IV	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– दो :** लोकनाट्य का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार; लोकनाट्य की विशेषताएँ; लोकसुभाषित का अर्थ तथा भेद; लोकोक्ति का अर्थ एवं वर्गीकरण; मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर।	15

विशेष निर्देश : जिन विद्यार्थियों ने हिन्दी विषय के साथ स्नातक कक्षा 75 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण की होगी, वे स्वेच्छया इस प्रश्नपत्र के स्थान पर शोध परियोजना कर सकते हैं।

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक साहित्य और संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1973
2. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1973
3. डॉ. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 2007
4. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज, 1957
5. रामनाथ सुमन, संपादक, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, प्रयागराज, संवत 2010
6. प्रो. चितरंजन मिश्र एवं दुर्गाप्रसाद ओझा, समकालीन हिंदी एवं अवधी कविता, प्रकाशन केंद्र लखनऊ

7. डॉ. श्रीधर मिश्र, भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज, 1971
8. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, भारत का लोक सांस्कृतिक विमर्श, कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली, 2018
9. डॉ. सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल कंपनी, आगरा, 1971
10. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1949

कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर **: VII**
विषय : **हिन्दी**		
पाठ्यक्रम कोड **: A010705T (O-2)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **तुलनात्मक अध्ययन**	

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) **:**

तुलनात्मक अध्ययन आज के समय में एक आवश्यक तथा उपयोगी विषय है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में स्थित है, जो कि नेपाल के अत्यन्त निकट है। नेपाली भारतीय संविधान में स्वीकृत 22 भाषाओं में से एक है, तो नेपाल में भी हिन्दी बड़े पैमाने पर बोली–समझी जाती है। अतः इस पत्र के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन के लिये हिन्दी एवं नेपाली साहित्य को चुना गया है। साहित्य के माध्यम से भारतीय एवं नेपाली समाज–संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पत्र का उद्देश्य है।

क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 36%**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**

इकाई	**विषयवस्तु**	**व्याख्यानों की संख्या**
I	तुलनात्मक अध्ययनः अर्थ एवं स्वरूप; तुलनात्मक अध्ययन का इतिहास; तुलनात्मक अध्ययन के विविध आयाम; भारत में तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता तथा क्षेत्र; हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसका विकास।	15
II	भारत एवं नेपाल के ऐतिहासिक सम्बन्ध; भारत एवं नेपाल की साझी सांस्कृतिक भूमि; नेपाल में हिन्दी और भारत में नेपाली भाषा; हिन्दी एवं नेपाली भाषा–साहित्य में अन्तर्निहित सांस्कृतिक एकता के सूत्र; हिन्दी एवं नेपाली साहित्य की साझी विरासत।	15
III	हिन्दी एव नेपाली के एक–एक कवि का तुलनात्मक अध्ययन	15
IV	हिन्दी एवं नेपाली की एक–एक कथा–रचना का तुलनात्मक अध्ययन	15

विशेष निर्देश : हिन्दी विषय के साथ स्नातक कक्षा 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण किये हुए विद्यार्थी स्वेच्छया इस प्रश्नपत्र के स्थान पर शोध परियोजना (पाठ्यक्रम कोड : A010705T-O) **कर सकते हैं।**

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक साहित्य और संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1973
2. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1973
3. डॉ. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 2007
4. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज, 1957
5. रामनाथ सुमन, संपादक, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, प्रयागराज, संवत 2010
6. प्रो. चितरंजन मिश्र एवं दुर्गाप्रसाद ओझा, समकालीन हिंदी एवं अवधी कविता, प्रकाशन केंद्र लखनऊ
7. डॉ. श्रीधर मिश्र, भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज, 1971
8. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, भारत का लोक सांस्कृतिक विमर्श, कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली, 2018
9. डॉ. सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल कंपनी, आगरा, 1971
10. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1949

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स</td><td colspan="2">बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td><td colspan="2">सेमेस्टर : VII</td></tr>
<tr><td colspan="5">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम कोड : A010705T (O)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="5">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 04</td><td colspan="2">पूर्णांक : 100</td><td>उत्तीर्णांक: 36%</td></tr>
<tr><td colspan="5"></td></tr>
<tr><td></td><td colspan="3">विषयवस्तु</td><td></td></tr>
<tr><td></td><td colspan="3">इस पत्र के अन्तर्गत ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने हिन्दी विषय लेकर बी. ए. की परीक्षा 75 प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की हो, वे किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य कर सकेंगे। शेष विद्यार्थी विकल्प के रूप में दिये गये प्रश्नपत्र का अध्ययन करेंगे।</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="5">पाठ्यक्रम परिणाम :
1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।
4. विद्यार्थियों को शोध सहित बी. ए. ऑनर्स की उपाधि प्राप्त हो सकेगी, जिससे वे सीधे पीएच. डी. में शोध हेतु अर्ह होंगे।</td></tr>
</table>

कार्यक्रम / कक्षा : **बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स**	**बी. ए. चतुर्थ वर्ष**	सेमेस्टर **: VIII**
विषय : **हिन्दी**		

पाठ्यक्रम कोड **: A010801T**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) **:** **हिन्दी आलोचना और आलोचक**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

संस्कृत में काव्यशास्त्र की एक सशक्त परम्परा रही है। हिन्दी की आधुनिक आलोचना भारतीय एवं पाश्चात्य– दोनों चिन्तन–सरणियों के समन्वय से और भी पुष्ट हुई है। यह जिन आलोचकों और आलोचना–कृतियों के माध्यम से समृद्ध हुई है, उनमें से कतिपय प्रमुख आलोचकों और उनके अवदान से अवगत कराना ही इस पत्र का उद्देश्य है। इस पत्र के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–

1. इस प्रश्नपत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिककाल में लिखे काव्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों तथा उसकी प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य से आधुनिककालीन काव्य के अन्तर को जान सकेंगे तथा नवयुगीन चेतना एवं संवेदना को समझ सकेंगे।
3. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका को जान सकेंगे।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36%**
कुल व्याख्यान संख्या : 60		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	
1.	**हिन्दी आलोचना का विकास और मुख्य आलोचना–दृष्टियां :** हिन्दी आलोचना का आरम्भिक स्वरूप; हिन्दी आलोचना का विकास– शुक्ल पूर्व, शुक्ल युग एवं शुक्लोत्तर युग; हिन्दी आलोचना की प्रमुख दृष्टियां– ऐतिहासिक, शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, प्रभाववादी, रूपवादी तथा विमर्शवादी; हिन्दी आलोचना का समकालीन परिदृश्य।	15	
2.	**हिन्दी के प्रमुख आलोचक :** 1. आ. रामचन्द्र शुक्ल 2. डॉ. नन्ददुलारे बाजपेयी 3. डॉ. नगेन्द्र	15	
3.	**हिन्दी के प्रमुख सांस्कृतिक आलोचक** 1. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी 2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी 1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय	15	
4.	**हिन्दी के प्रमुख मार्क्सवादी आलोचक :** 1. डॉ. रामविलास शर्मा 2. डॉ. नामवर सिंह 3. गजानन माधव मुक्तिबोध	15	

सहायक ग्रंथः

1. कविता के नए प्रतिमान; डॉ. नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. आलोचक और आलोचना; बच्चन सिंह; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।

3. हिन्दी आलोचना का विकास; नंदकिशोर नवल; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी आलोचनाः शिखरों का साक्षात्कार; डॉ. रामचन्द्र तिवारी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य; डॉ. चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला।
6. तीसरा रुख; पुरुषोत्तम अग्रवाल; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. नई कविता और अस्तित्ववाद; रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी आलोचना; विश्वनाथ त्रिपाठी; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. इतिहास और आलोचना; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. दूसरी परंपरा की खोज; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
11. हिन्दी आलोचना का विकास; मधुरेश; लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
12. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना; रामविलास शर्मा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
13. हिंदी के प्रहरी; रामविलास शर्मा, सं. विश्वनाथ त्रिपाठी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
14. आलोचना की सामाजिकता; मैनेजर पाण्डेय; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
15. आलोचना और आलोचना; देवी शंकर अवस्थी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="2">कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स</td><td colspan="3">बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td><td colspan="2">सेमेस्टर : VIII</td></tr>
<tr><td colspan="7">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम कोड : A010802T</td><td colspan="3">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="7">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
कवियों द्वारा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही उत्कृष्ट प्रबन्ध–काव्यों के सृजन की परम्परा चली आयी है। एक–से–एक श्रेष्ठ महाकाव्य हिन्दी में उपलब्ध हैं, जिन्होंने परवर्ती कवियों पर
तो अपना प्रभाव डाला ही है, जनता को भी बड़े व्यापक स्तर पर प्रभावित और प्रेरित किया है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक लिखे गये हिन्दी के प्रसिद्ध प्रबन्ध–काव्यों और उनकी विशेषताओं से परिचित कराना है। इस पत्र के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–
1. प्राचीन एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ प्रबन्ध–काव्यों को इस पत्र के अन्तर्गत चयनित किया गया है। इनके अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को प्रबन्ध–काव्यों के स्वरूप एवं महत्ता का परिज्ञान हो सकेगा।
2. मध्यकालीन जीवन की दिशा बदल देने के साथ ही समाज पर आज तक अपना प्रभाव बनाये हुए इन प्रबन्ध–काव्यों की विशेषताओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन जीवन–मूल्यों तथा काव्य–मूल्यों का भी विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक :
25+75=100</td><td colspan="2">उत्तीर्णांक : 36%</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="6">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="4">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td><td>क्रेडिट संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="4">चन्दवरदाई :
पृथ्वीराजरासो–रेवा तट (प्रारम्भिक 20 छन्द)
आलोचना के प्रमुख बिन्दु : रासो काव्य–परम्परा और पृथ्वीराजरासो; पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिकता; तत्कालीन परिवेश और पृथ्वीराजरासो; रासो का काव्य–सौष्ठव; रेवा तट का काव्य–वैशिष्ट्य।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>2.</td><td colspan="4">मलिक मुहम्मद जायसी
पद्मावत– नागमती वियोग वर्णन
आलोचना के प्रमुख बिन्दु : सूफी काव्य–परम्परा और 'पद्मावत'; 'पद्मावत' में प्रेम–व्यंजना; 'पद्मावत' में लोक–तत्त्व; 'पद्मावत' का काव्य–सौष्ठव; पद्मावत के प्रतीकार्थ; नागमती वियोग–वर्णन का वैशिष्ट्य।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>3.</td><td colspan="4">तुलसीदास
श्रीरामचरितमानस; गीता प्रेस, गोरखपुर
उत्तरकाण्ड : दोहा संख्या– 21 से 41।
आलोचना के प्रमुख बिन्दु– राम–काव्य–परम्परा और तुलसीदास; निर्गुण का स्वरूप तथा कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, लोक–मंगल; दार्शनिक सिद्धान्त तथा काव्यगत विशेषताएँ।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>4.</td><td colspan="4">केशवदास :रामचन्द्रिका
परशुराम–लक्ष्मण संवाद (संक्षिप्त रामचन्द्रिका; सम्पादक–रामचन्द्र तिवारी; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; पद सं. 52 से 99)
आलोचना के प्रमुख बिन्दु– केशव का आचार्यत्व; राम–काव्य–परम्परा और 'रामचन्द्रिका'; काव्य–वैभव; संवाद–योजना।</td><td>15</td><td>1</td></tr>
</table>

सहायक ग्रंथ :

6. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
7. डॉ. नामवर सिंह, पृथ्वीराज रासो की भाषा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. डॉ. सुमन राजे; चन्दवरदाई; प्रथम संस्करण–2005;उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
9. डॉ. प्रभाकर शुक्ल; मलिक मुहम्मद जायसी; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
10. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979।
11. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
12. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
13. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
14. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
15. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज (सम्पादक); तुलसी पंचशती स्मृति–पारिजात; योगक्षेम प्रकाशन, चित्रकूट, सिन्धुनगर, बरेली।
16. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
17. प्रो. हरीशकुमार शर्मा; तुलसी साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ; प्रथम संस्करण–2012; साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स</td><td>बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td><td colspan="2">सेमेस्टर : VIII</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम कोड : A010803T</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी काव्य</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
साहित्य हमें हमारे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है। राष्ट्रीयता एक बड़ा जीवन–मूल्य है। हिन्दी कविता प्राचीन काल से ही इससे जुड़ी रही है। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न कालों के ऐसे हिन्दी कवियों और उनके इस तरह के काव्य से परिचित कराना है जो राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हैं। इस तरह की कविताओं के अध्ययन से उनमें निश्चय ही राष्ट्रीयता की भावना और भी पुष्ट तथा प्रगाढ़ हो सकेगी और उनमें राष्ट्र के प्रति अनुराग जाग्रत होगा।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक : 25+75 =100</td><td>उत्तीर्णांक : 36%</td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या- 60</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2">विषयवस्तु</td><td>व्याख्यानों की संख्या</td></tr>
<tr><td>I</td><td colspan="2">क. मैथिलीशरण गुप्त :
शिक्षा की अवस्था (भारत भारती); मातृभूमि।
ख. जयशंकर प्रसाद
अरुण यह मधुमय देश हमारा; हिमालय के आँगन में; पेशोला की प्रतिध्वनि; हिमाद्रि तुग श्रृंग से।
ग. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला :
वर दे वीणावादिनि वर दे; भारती वंदना (भारति जय विजय करे); जागो फिर एक बार–2</td><td>15</td></tr>
<tr><td>II</td><td colspan="2">क. महादेवी वर्मा : पन्थ होने दो अपरिचित; जाग बेसुध जाग; जाग तुझको दूर जाना।
ख. माखनलाल चतुर्वेदी : पुष्प की अभिलाषा; जवानी।
ग. सुभद्रा कुमारी चौहान– वीरो का कैसा हो वसन्त; झाँसी की रानी।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>III</td><td colspan="2">क. बालकृष्ण शर्मा नवीन : कोटि–कोटि कण्ठों से निकली; विप्लव गान।
ख. रामधारी सिंह दिनकर : अरुणोदय, हिमालय; कलम आज उनकी जय बोल।
श्यामनारायण पाण्डेय : चेतक की वीरता; राणा प्रताप की तलवार।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>IV</td><td colspan="2">क. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी : उठो धरा के अमर सपूतो; वीर तुम बढ़े चलो।
ख. बंशीधर शुक्ल : कदम–कदम बढ़ाए जा, सबेरा हुआ है।
ग. अटल बिहारी बाजपेयी : कदम मिलाकर चलना होगा।</td><td>15</td></tr>
<tr><td colspan="4">(आलोचना–बिंदु : कवियों का काव्य–सौष्ठव, कविताओं का अनुभूति पक्ष तथा काव्य–सौंदर्य।)</td></tr>
<tr><td colspan="4">सन्दर्भ ग्रन्थ :
1. उदयनारायण तिवारी, वीर काव्य, भारती भण्डार, प्रयाग, प्रथम संस्करण, संवत 2005वि.
2. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी, संवत 2010 वि.
3. ब्रजरत्न दास, भारतेंदु ग्रंथावली, वाराणसी
4. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन 2008
5. विनोद शंकर व्यास (संपा.), प्रसाद और उनका साहित्य, विद्या भास्कर बुक डिपो, वाराणसी
6. नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
7. kavitakosh.org
8. epustakalay.com
9. ndl.iitkgp.ac.in (National digital library of India)</td></tr>
</table>

कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर **: VIII**

विषय : **हिन्दी**

पाठ्यक्रम कोड **: A010804T**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) **:** **पाश्चात्य काव्यशास्त्र**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) **:**

भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है। इस पत्र के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं–

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं को जान सकेंगे।
2. भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन से काव्यशास्त्र की एक सम्यक् समझ उनमें विकसित हो सकेगी।
3. आधुनिक साहित्य के अध्ययन एवं समीक्षा हेतु इस पत्र का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36%**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	प्लेटो के काव्य–सिद्धांत। अरस्तू की काव्य–विषयक मान्यताएं– अनुकरण, विरेचन और त्रासदी। लोंजइनस– उदात्त तत्व। क्रोचे– अभिव्यंजनावाद।	15	1
2.	आई. ए. रिचर्डस– सम्प्रेषण सिद्धान्त; मूल्य सिद्धांत तथा काव्य भाषा सिद्धान्त। टी. एस. इलियट– परम्परा की अवधारणा; निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत। कॉलरिज– कल्पना और फैंटेसी सिद्धान्त। वर्ड्सवर्थ– काव्यभाषा सिद्धान्त।	15	1
3.	मैथ्यू ऑर्नल्ड के साहित्य सिद्धान्त। पाश्चात्य आलोचना के कतिपय उपकरण : मिथक; फन्तासी; कल्पना; प्रतीक और बिम्ब; बिम्ब–प्रतीकवाद।	15	1
4.	विविध साहित्यिक वाद : आदर्शवाद; यथार्थवाद; मनोविश्लेषणवाद; स्वच्छन्दतावाद; अस्तित्ववाद; संरचनावाद एवं उत्तर–संरचनावाद; रूसी रूपवाद, नयी समीक्षा मिथक।	15	1

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव; पाश्चात्य समीक्षा के चार सूत्रधार; शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय; पाश्चात्य काव्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. निर्मला जैन; पाश्चात्य साहित्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्लीं
4. रामचन्द्र तिवारी; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. गणपतिचन्द्र गुप्त; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. राजनाथ शर्मा; पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नयी प्रवृत्तियां; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

7. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं को जान सकेंगे।
8. भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन से काव्यशास्त्र की एक सम्यक् समझ उनमें विकसित हो सकेगी।
9. आधुनिक साहित्य के अध्ययन एवं समीक्षा हेतु इस पत्र का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

<table>
<tr><td colspan="3">कार्यक्रम / कक्षा : बी. ए. ऑनर्स / शोध सहित ऑनर्स</td><td colspan="3">बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम कोड : A010805T (O)</td><td colspan="3">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="6">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक : 25+75=100</td><td colspan="2">उत्तीर्णांक : 36%</td></tr>
<tr><td colspan="6">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="4">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="4">इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थियों की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी।
इस पत्र हेतु कुल पूर्णांक 100 होंगे, जिनमें से शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन 50 अंकों में किया जायेगा और 25 अंकों के लिये मौखिक परीक्षा होगी। शेष 25 अंक विद्यार्थी को तभी मिलेंगे, जब शोध परियाजना से सम्बन्धित विषय पर उसका कम–से–कम एक शोधपत्र यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित या पीयर रिव्यूड पत्रिका में प्रकाशित होगा।</td><td></td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

<table>
<tr><td colspan="2">कार्यक्रम / कक्षा : डिग्री
(आनर्स / आनर्स विद रिसर्च)</td><td colspan="2">बी. ए. चतुर्थ वर्ष</td><td colspan="2">सेमेस्टर : **VIII**</td></tr>
<tr><td colspan="6">विषय : **हिन्दी**</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम कोड : **A010805T (O-1)**</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
भाषा विज्ञान तथा देवनागरी लिपि</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="5">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है।</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : **36%**</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="5">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td><td></td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**भाषा विज्ञानः** भाषा विज्ञान : अभिप्राय एवं वैशिष्ट्य; भाषा विज्ञान के अंग तथा प्रयोजन; भाषा–विज्ञान की शाखाएं– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओंसेसम्बन्ध; भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास।	15	1
2.	**ध्वनि–विज्ञान और रूप–विज्ञान :** हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण– स्वर और व्यंजन; ध्वनियों के गुण एवं नियम; स्वनिम की व्यवहारिक उपयोगिता तथा विशेषताएं; ध्वनि–परिवर्तन के कारण; ध्वनि–परिवर्तन कीदिशाएं। रूप–विज्ञान : रूपिम की अवधारणा; रूपिम के प्रकार; शब्द और पद में अन्तर; पद–सम्बन्धी रूप–परिवर्तन के कारण।	15	1
3.	**वाक्य–विज्ञान और अर्थ विज्ञान :** वाक्य–विज्ञान : वाक्य–विज्ञान की परिभाषा; वाक्य की आवश्यकताएं; वाक्य के अंग; वाक्यों के प्रकार; वाक्य रचना में परिवर्तन के कारण। अर्थ–विज्ञान : अर्थ की प्रतीति; शब्द और अर्थ का सम्बन्ध; अर्थबोध के साधन; अर्थ–परिवर्तन की दिशाएं; अर्थपरिवर्तन के कारण।	15	1
4.	**हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि :** हिन्दी भाषा का विकास; हिन्दी की बोलियों का परिचय (पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी के विशेष संदर्भ में)। भारत में लिपियों का विकास; देवनागरी लिपि का सामान्य परिचय; विशेषताएं; सुधार के प्रयत्न तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण।	15	1

सहायक ग्रन्थ :

1. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, 1972
2. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाशा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1980
3. डॉ0 रामकिशोर शर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
4. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
5. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिन्दी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1981
6. राजमणि शर्मा, हिन्दी भाषा : इतिहास एवं स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014

7. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1999
8. डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, हिन्दुस्तानी अकेडमी, प्रयाग, 1951
9. हरदेव बाहरी, हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, किताबमहल, इलाहाबाद, 42 वाँ संस्करण, 2018

कार्यक्रम / कक्षा : डिग्री (आनर्स / आनर्स विद रिसर्च)	बी. ए. चतुर्थ वर्ष	सेमेस्टर : **VIII**

विषय : **हिन्दी**

पाठ्यक्रम कोड : **A010805T (O-2)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **प्रवासी हिन्दी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

भारत से बाहर विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों की एक बड़ी संख्या हिन्दी में रचनारत है। उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य को एक अलग आयाम देती हैं। जड़ों से बिछड़ने की पीड़ा, देश से बाहर रहते हुए भी देश से जुड़े रहने की ललक, दूर देश में होने वाली समस्याएं, नयी पीढ़ी में आ रहे बदलाव आदि प्रवासी साहित्य में अभिव्यंजित होते दिखते हैं। हिन्दी के विद्यार्थी प्रवासी साहित्य से भी परिचित हो सकें, इस उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है। इस पत्र के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं—

1. विद्यार्थी दूर देशों में बैठे हुए प्रवासी भारतीयों की संवेदना से तारतम्य बैठा सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के विस्तृत संसार से परिचित हो सकेंगे।
3. प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों के हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान से अवगत हो सकेंगे।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36%**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	प्रवासी : अर्थ एवं क्षेत्र; प्रवासी साहित्य : अवधारणा और प्रकार; प्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास; प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का हिन्दी के विकास में योगदान— उपन्यास, कहानी तथा कविता के विशेष सन्दर्भ में |	15	1
2.	**काव्य :** वह अनजान प्रवासी— अभिमन्यु अनत परिन्दा याद का; फिजा का रंग (गजलें)— उषाराजे सक्सेना आपकी पितृ—छाया; मां : एक याद— दीपिका जोशी संध्या कोटि—कोटि दीप जले; शिवास्ते पंथानः सन्तु— अश्विन गांधी तुम लन्दन आना चाहते हो; एक स्वप्न— निखिल कौशिक चलो आज हम दीप जलायें— सुरेन्द्रनाथ तिवारी	15	1
3.	**उपन्यास :** **लौटना**— सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली **आलोचना के बिन्दु :** सुषम बेदी की उपन्यास कला, पठित उपन्यास का सारांश, उपन्यास की समीक्षा, प्रतिपाद्य ।	15	1
4.	**कहानियां :** तेजेन्द्र शर्मा— कोख का किराया, जकिया जुबेरी— सांकल, जय वर्मा—गुलमोहर सुधा ओम ढींगरा— कौन सी जमीन अपनी, पूर्णिमा बर्मन— यों ही चलते हुए **आलोचना के बिन्दु :** पठित कहानियों का सारांश, वैशिष्ट्य, एवं समीक्षा।	15	1

सहायक ग्रंथ :

1. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य; सं. विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा; प्रो. प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी हिंदी साहित्य : विविध आयाम; डॉ. रमा
4. हिंदी का प्रवासी साहित्य; डॉ. कमलकिशोर गोयनका
5. प्रवासी लेखन : नई जमीन, नयाँ आसमान; अनिल जोशी
6. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानियाँ : डॉ. सुरेंद्र गंभीर

7. प्रवासी श्रम इतिहास; धनंजय सिंह
8. प्रवास में; डॉ. उषाराजे सक्सेना
9. प्रवासी साहित्यकार मूल्यांकन, श्रृंखला–1; तेजेंद्र शर्मा, सं. डॉ. रमा, महेंद्र प्रजापति
10. प्रवासी साहित्य : भाव और विचार, संध्या गर्ग
11. हिंदी प्रवासी साहित्य (गद्य साहित्य);डॉ. कमलकिशोर गोयनका
12. प्रवासी की कलम से; बादल सरकार

बी0ए0 हिन्दी माइनर

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : सर्टिफिकेट</td><td colspan="2">बी. ए. प्रथम वर्ष</td><td>सेमेस्टर : I</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : हिन्दी (माइनर)</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम कोड : A010101T (M-1)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
विद्यार्थियों को प्राचीन और नवीन कतिपय प्रतिनिधि हिन्दी कवियों और उनकी कविताओं का ज्ञान कराना जिससे वे हिन्दी कविता की सामान्य विशेषताओं को समझ सकें और उनमें हिन्दी कविता के और भी अध्ययन के प्रति रुचि विकसित हो सके। हिन्दी की स्थानीय उपभाषाओं अवधी अथवा भोजपुरी की कुछ चयनित काव्य–रचनाओं के अध्ययन के साथ ही भारतीय काव्यशास्त्र के भी ऐसे उपयोगी तत्त्वों के बारे में सामान्य जानकारी प्रदान करना, जो प्रतियोगी परीक्षाओं में उनके काम आ सकें।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 6</td><td colspan="2">पूर्णांक : 25+75 =100</td><td>उत्तीर्णांक : 33%</td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या- 90</td></tr>
</table>

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**भक्तिकालीन–काव्य :** **क. कबीरदास :** (कबीरदास; संपादक– श्यामसुंदर दास) गुरुदेव को अंग– 01,06,11,17,20 तथा विरह को अंग–04,10,12,20,33। **आलोचना के बिन्दु–** कबीर की भक्ति, कबीर का समाज–दर्शन। **सूरदास** (प्राचीन काव्य संग्रह; संपादक–डॉ. राजदेव सिंह) विनय के पद संख्या– 1 से 5; बाललीला के पद– 6, 7, 8; **आलोचना के बिन्दु–** कृष्ण–भक्ति काव्य–परम्परा में सूरदास का स्थान; सूर की भक्ति, सूरदास का विरह–वर्णन; सूर का वात्सल्य–वर्णन। **ख. तुलसीदास :** श्रीरामचरितमानस; गीता प्रेस, गोरखपुर अयोध्याकाण्ड; दोहा संख्या– 28 से 41। आलोचना– तुलसी का समन्वयवाद, काव्यगत विशेषताएँ।	15
II	**रीतिकालीन काव्य :** **क. बिहारीलाल :** बिहारी रत्नाकर; संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर दोहा संख्या– 1,2,5,6,7,15,19,20,21,25,32,38। आलोचना के बिन्दु– बिहारी : रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि, बिहारी की कविताओं में गागर में सागर। **ख. घनानन्द** (घनानन्द कवित्त; संपादक– विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) छंद संख्या– 1 से 7 तक। **आलोचना के बिन्दु–** रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानन्द; घनानन्द का प्रेम–वर्णन।	15
III	**छायावादी काव्य :** **क. जयशंकर प्रसाद :** बीती विभावरी जाग री; पेशोला की प्रतिध्वनि। आलोचना : जयशंकर प्रसाद और छायावाद; जयशंकर प्रसाद का काव्य–वैभव। **ख. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला :** जागो फिर एक बार–2; वर दे वीणावादिनि। निराला की काव्यगत विशेषताएँ; निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना।	15

IV	**प्रगति–प्रयोगवादी काव्य :** **क. अज्ञेय :** यह दीप अकेला, कलगी बाजरे की। आलोचना के बिन्दु : प्रयोगवाद और अज्ञेय, संकलित कविताओं का प्रतिपाद्य और समीक्षा। **ख. मुक्तिबोध :** विचार आते हैं; मुझे हर कदम पर चौराहे मिलते हैं। **आलोचना के बिन्दु–** मुक्तिबोध की काव्य–संवेदना, आधुनिक कवियों में मुक्तिबोध का स्थान।	15
V	**काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय :** काव्य के लक्षण, काव्य–प्रयोजन, काव्य हेतु तथा काव्य की आत्मा।	15
VI	**अलंकार–छन्द परिचय :** अलंकार का अर्थ तथा उपयोगिता; अलंकार–वर्गीकरण। अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश, संदेह, भ्रांतिमान तथा मानवीकरण अलंकारों का सोदाहरण परिचय। छंद की परिभाषा तथा तत्त्व; छंदों के भेद तथा कविता में उनका महत्त्व। चौपाई, सोरठा, दोहा, कवित्त, सवैया, कुण्डलिया, रोला, गीतिका, वंशस्थ, मन्दाक्रान्ता, तथा मुक्त छंद के लक्षण और उदाहरण।	15

सहायक ग्रन्थ :

1. मुंशीलाल शर्मा, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
2. किशोरीलाल, सूर और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
3. नन्ददुलारे वाजपेयी, सूर संदर्भ, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
4. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937
5. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953
6. राजेन्द्र सिंह गौड़, आधुनिक कवियों की काव्य साधना, श्रीराम मेहता एंड संस, आगरा, 1953
7. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
8. शम्भूनाथ सिंह, छायावाद युग, सरस्वती मन्दिर प्रकाशन, वाराणसी 1962
9. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. रामस्वरूप चतुर्वेदी, अज्ञेय का रचना संसार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. डॉ. हंसराज त्रिपाठी, आत्मसंघर्ष की कविता और मुक्तिबोध, मानस प्रकाशन, प्रतापगढ़
12. अज्ञेय, दूसरा सप्तक, प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रतीक प्रकाशन माला, 1951
13. देवेन्द्रनाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2002
14. नंदकिशोर नवल, हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
15. बच्चन सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1987
16. भगीरथ मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988
17. भगीरथ मिश्र काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
18. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
19. डॉ. रामचन्द तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2010
20. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1990
21. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; परिमल; लोकभारती राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
22. डॉ. सत्येन्द्र कुमार दुबे; मन डूब गया; नालंदा प्रकाशन दिल्ली, 2020

कार्यक्रम / कक्षा : सर्टिफिकेट	बी. ए. प्रथम वर्ष	सेमेस्टर : **II**
विषय : हिन्दी (माइनर)		
पाठ्यक्रम कोड **: A010101T(M-2)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा भाषा विज्ञान**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास का ज्ञान कराना जिससे वे हिन्दी भाषा और साहित्य में विभिन्न कालखण्डों में आये परिवर्तनों को समझ सकें और प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों की तैयारी कर सकें। उन्हें भाषाविज्ञान जैसे उपयोगी विषय की भी सामान्य जानकारी देना।

क्रेडिट **: 6**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 33%**

कुल व्याख्यान संख्या- 90

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि और आदिकाल :** हिन्दी भाषा और साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी साहित्य का कालविभाजन और नामकरण; हिन्दी साहित्य के आदिकाल की परिस्थितियाँ; हिन्दी का आदिकालीन साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ।	15
II	**हिन्दी साहित्य का मध्यकाल :** भक्तिकाल की परिस्थितियाँ; भक्तिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और प्रवृत्तियाँ; रीतिकाल का नामकरण और परिस्थितियाँ; रीतिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और विशेषताएँ।	15
III	**हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल (कविता) :** आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि; आधुनिक काल की सामान्य विशेषताएँ; आधुनिककालीन कविता का विकास–क्रम : भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, छायावादोत्तर तथा स्वातन्त्र्योत्तर युग की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ।	15
IV	**हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता का विकास :** हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि; आधुनिककालीन हिन्दी गद्य का उदय और उसका प्रारम्भिक स्वरूप; हिन्दी की प्रमुख गद्य विधाओं नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी का उद्‌भव और विकास; हिन्दी पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास।	15
V	**भाषा एवं भाषा विज्ञान :** भाषा की परिभाषा तथा अभिलक्षण; भाषा विज्ञान : अर्थ एवं प्रकार; अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।	15
VI	**हिन्दी भाषा का वैशिष्ट्य :** भारोपीय भाषा परिवार और हिन्दी; हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ; हिन्दी की ध्वनियों का वर्गीकरण; ध्वनि–परिवर्तन की दिशाएँ और कारण।	15

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. नगेन्द्र, (संपा.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976
2. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019

4. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
6. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियॉ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, 1972
8. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1980
9. डॉ. रामकिशोर शर्मा, हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
10. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
11. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1981
12. राजमणि शर्मा, हिंदी भाषा : इतिहास एवं स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
13. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1999
14. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, हिन्दुस्तानी अकेडमी, प्रयाग, 1951
15. हरदेव बाहरी, हिन्दी : उद्‌भव, विकास और रूप, किताबमहल, इलाहाबाद, 42 वाँ संस्करण, 2018

<table>
<tr><td>कार्यक्रम / कक्षा : डिप्लोमा</td><td colspan="2">बी. ए. द्वितीय वर्ष</td><td>सेमेस्टर : III</td></tr>
<tr><td colspan="4">विषय : हिन्दी (माइनर)</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम कोड : A010201T(M-1)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी गद्य</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :
इस पत्र का विषयक्षेत्र हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का सम्यक ज्ञान देना तथा उन्हें हिन्दी की कुछ प्रतिनिधि गद्य रचनाओं का अध्ययन करवाना है। इससे हिन्दी गद्य के अध्ययन, लेखन तथा आलोचना के प्रति उनकी रुचि विकसित होगी। गद्य साहित्य के पठन–पाठन की समुचित रीति को समझकर उनमें आलोचकीय विवेक उत्पन्न होगा और रचनाओं में अन्तर्निहित जीवन–मूल्यों से जुड़कर वे हिन्दी साहित्य की महत्ता को समझ सकेंगे। लेखन के क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों को इस पत्र से विशेष लाभ प्राप्त होगा।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 6</td><td colspan="2">पूर्णांक : 25+75 =100</td><td>उत्तीर्णांक : 33%</td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या- 90</td></tr>
</table>

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**नाटक :** **कहत राय प्रवीन–सुरेन्द्र दुबे** **आलोचना के बिन्दु** : सुरेन्द्र दुबे की नाट्यकला; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'कहत राय प्रवीन' की समीक्षा; 'कहत राय प्रवीन' में इतिहास, कल्पना और आधुनिक संवेदना; 'कहत राय प्रवीन' में राय प्रवीन का चरित्र–चित्रण।	15
II	**एकांकी :** औरंगजेब की आखिरी रात– रामकुमार वर्मा लक्ष्मी का स्वागत– उपेन्द्रनाथ अश्क सीमारेखा– विष्णु प्रभाकर आलोचना के बिन्दु : एकांकी–कला की दृष्टि से मूल्यांकन, प्रासंगिकता और महत्त्व।	15
III	**उपन्यास :** गबन– प्रेमचंद।	15
IV	**पाठ्य 'गबन' उपन्यास की आलोचना :** हिन्दी उपन्यास और प्रेमचंद; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर 'गबन' की समीक्षा; 'गबन' के नायक–नायिका का चारित्रिक वैशिष्ट्य; 'गबन' उपन्यास का उद्देश्य और प्रासंगिकता।	15
V	**हिन्दी कहानी :** आकाशदीप–जयशेकर प्रसाद हार की जीत– सुदर्शन लाल पान की बेगम– फणीश्वरनाथ रेणु आलोचना के बिन्दु : कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'आकाशदीप', 'हार की जीत' तथा 'लाल पान की बेगम' कहानियों की समीक्षा; कथानक का सार तथा उद्देश्य।	15
VI	**हिन्दी निबंध :** भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र करुणा–आ. रामचन्द्र शुक्ल, देवदारु– हजारीप्रसाद द्विवेदी पठित निबंधों की आलोचना : निबंध–कला की दृष्टि से पठित निबंधों का मूल्यांकन तथा प्रतिपाद्य।	15

सहायक ग्रन्थ :

1. रामचंद्र तिवारी, हिंदी निबंध और निबंधकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007।
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992।
4. रामचंद्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
5. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, गद्य विन्यास और विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2018।
7. के. सत्यनारायण (संपा.) दृश्य सप्तक, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, प्रथम संस्करण, सन 1975.
8. सोमनाथ गुप्ता, हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, इंद्रा चंद्र नारंग, इलाहाबाद तीसरा संस्करण, 1951.
9. डॉ. दशरथ ओझा, हिंदी नाटक : उद्‌भव एवं विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
10. गिरीश रस्तोगी, हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. सत्यवती त्रिपाठी, आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
12. सिद्धनाथ कुमार, हिंदी एकांकी की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
13. डॉ. रामचरण महेंद्र, हिन्दी एकांकी, और एकांकीकार वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

कार्यक्रम / कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : **IV**
विषय : हिन्दी (माइनर)		
पाठ्यक्रम कोड : **A010201T (M-2)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी**	
पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) : यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों में हिन्दी में भाषिक और व्यवहारिक कौशल का विकास करने में सहायक होगा। इसके द्वारा विद्यार्थी हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप के उपयोगी तत्त्वों को जानने के साथ–साथ उसमें व्यवहारिक लेखन–सम्बन्धी दक्षता भी प्राप्त कर सकेंगे और अपने को हिन्दी में अधिक कार्यकुशल बना सकेंगे। हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को भी इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से वे समझ सकेंगे।		
क्रेडिट : **6**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **33%**
कुल व्याख्यान संख्या- 90		

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**हिंदी की संवैधानिक स्थिति :** अनुच्छेद 343 से 351 तक तथा अनुच्छेद 120 और 210; राष्ट्रपति के आदेश–1952, 1955 एवं 1960; राष्ट्रपति के आदेश– सन 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा–संशोधित 1967; राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987। राजभाषा हिन्दी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।	15
II	**शुद्ध–अशुद्ध हिन्दी :** हिन्दी की वर्तनी, लिंग, वचन, कारक, उच्चारण तथा विराम चिन्हों से संबन्धित होने वाली अशुद्धियाँ और उनका समाधान।	15
III	**हिन्दी में व्यवहारिक लेखन :** सूचना; संदेश; कार्यवृत्त; कार्यसूची; प्रतिवेदन; आत्मविवरण; आवेदन–पत्र तथा ई–मेल लेखन।	15
IV	**हिन्दी में कार्यालयी पत्राचार :** कार्यालयी पत्राचार का स्वरूप एवं विशेषताएँ; पत्र, परिपत्र, स्मरण पत्र, चेतावनी–पत्र, कार्यवाही पत्र; प्रेस विज्ञप्ति; ज्ञापन; तथा तकनीकी एवं ऑनलाइन कार्य–दक्षता।	15
V	**अनुवाद :** अनुवाद का महत्त्व; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद के क्षेत्र; अनुवाद के उपकरण; अनुवादक के गुण।	15
VI	**हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय और उपयोगिता; कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने की सुविधाएँ एवं समस्याएँ; हिन्दी में पीपीटी स्लाइड एवं पोस्टर–निर्माण। इन्टरनेट और हिन्दी; हिन्दी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइटें; सरकारी तथा गैरसरकारी चैनल (ज्ञानदर्शन, ई–पाठशाला, स्वयं, मूक्स आदि)।	15

अध्ययन के लिये सहायक ग्रन्थ :

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा; राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शैलेन्द्र सेंगर; मीडिया लेखन और सम्पादन;आविष्कार प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ; संचार माध्यम : तकनीक और लेखन; श्याम प्रकाशन, जयपुर।
4. गोपीनाथ श्रीवास्तव; सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. असगर वजाहत / प्रेमरंजन; टेलीविजन लेखन;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

6. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो वार्ता शिल्प; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो नाटक की कला; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. रचनात्मक लेखन; रमेश गौतम; भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
10. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
11. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
12. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
13. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
14. डॉ. माधव सोनटके, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रयुक्ति और अनुवाद, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रक्रिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
16. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
17. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
18. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली